संक्षेप और संकेत-चिह्न सूची और अन्य सूचनाएँ

अनु.	अनुवाद/ अनुवादक
अ. ति.	अनुपलब्ध तिथि
अ. मु. वि.	अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
ई.	ईस्वी
ई. पू.	ईसा पूर्व
पृ. सं.	पृष्ठ संख्या
संपा.	संपादक/ संपादन
संक.	संकलन
संर.	संरक्षक
सह-संपा.	सह-संपादक
द्वि.	द्वितीय
तृ.	तृतीय
परि.	परिवर्द्धित/ परिष्कृत
वि. सं.	विक्रमी संवत्
जन.	जनवरी
सित.	सितंबर
अक्टू/ अक्तू.	अक्टूबर
नवं.	नवंबर
दिसं.	दिसंबर

जन-मार्च	जनवरी-फरवरी-मार्च
अप्रैल-जून	अप्रैल-मई-जून
जुलाई-सितं.	जुलाई-अगस्त-सितंबर
अक्टू-दिसं.	अक्टूबर-नवंबर-दिसंबर

अन्य सूचनाएँ

1. संदर्भों में 'नवांक' शब्द बार-बार उल्लिखित हुआ है, यहाँ 'नवांक' शब्द का अर्थ नामवर सिंह संपादित 'आलोचना' पत्रिका के अंकों के लिए प्रयुक्त किया गया है। ध्यातव्य है कि 'आलोचना' पत्रिका के विषयानुक्रम पृष्ठ पर 'नवांक' शब्द के साथ-साथ 'पूर्णांक' शब्द भी प्रकाशित होता था, किंतु इस शोध प्रबंध में 'नवांक' शब्द का प्रयोग ही किया गया है। पूर्णांक का तात्पर्य 1951 से 1966 ई. तक नामवर सिंह के संपादन से पूर्व प्रकाशित होनेवाले अंक के रूप में ग्रहण किया गया है।
2. संदर्भ सूची आदि के लिए एम.एल.ए हैंडबुक, के दिशा निर्देशों का ही पालन किया गया है, किंतु एम. एल. ए. के दिशा-निर्देश मूलतः अंग्रेज़ी भाषा में काम करने वालों के लिए ही तैयार किया गया है। उसके कई दिशा-निर्देश हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि की प्रकृति के अनुकूल ठीक नहीं बैठता है, उदाहरण के लिए एम. एल. ए. हैंडबुक कई संदर्भों में रोमन लिपि के 'कैपिटल लेटर्स' के प्रयोग की बात करता है, किंतु हिंदी में कैपिटल या स्माल लेटर्स में लिखने की अलग-अलग कोटियाँ नहीं हैं, इसलिए संदर्भों को प्रस्तुत करने के लिए उसके कई दिशा- निर्देश को कई स्थलों पर हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि की प्रकृति के अनुसार बनाकर प्रस्तुत किया गया है।
3. हिंदी की पत्रिका पर काम करते हुए उसमें अंकों की संख्या की सूचना देना आवश्यक प्रतीत हो रहा था, इसलिए, संदर्भों में उन्हें उल्लिखित कर दिया गया है।

4. पत्र-पत्रिकाओं में एक ही शीर्षक से कई अंकों में विभिन्न लेखकों के विविध लेख; निबंध, शोधकार्य आदि प्रकाशित होते रहते हैं। संदर्भों में विभिन्न लेखों, शोधपरक आलेख, निबंध आदि का बार-बार उल्लेख किया गया है, भ्रम की स्थिति न बने, इसके लिए प्रयः संदर्भ की पूरी-जारकारी दे दी गई है.

5. 'आलोचना' पत्रिका के अतिरिक्त अन्य पत्रिकाओं के संदर्भ में संपादक और अंकों की सूचना देना ज़्यादा ज़रूरी समझकर प्रस्तुत किया गया है।

6. समान संदर्भ उल्लिखित करने के लिए 'वही' शब्द का ही प्रयोग किया गया है। एम. एल. ए. हैंडबुक की अंग्रेज़ी भाषा में काम करनेवाली तकनीकी प्रयोगों का इस परिप्रेक्ष्य में प्रयोग नहीं किया गया है।

7. पत्रिका के नाम को 'एकल उद्धरण' (' ') चिह्न में दिया गया है। जैसे'आलोचना'। यह पुस्तक अथवा अन्य संपादित ग्रंथ से पत्रिका का अंतर स्पष्ट करने के लिए ऐसा किया गया है। कैपिटल और स्माल लेटर्स की अव्यावहारिक कठिनाई से मुक्ति पाने के लिए ऐसा किया गया है।

8. शोध-प्रबंध में जहाँ वर्ष के साथ ईस्वी आदि का प्रयोग नहीं किया गया है, वहाँ ईस्वी सन् के रूप में देखा जाए। विक्रमी संवत् आदि की सूचनाएँ यथास्थान उल्लिखित हैं।